9/7/20 - विषय हिन्दी - नाम - डॉ.साधना कुमारी

Lecture-2

बोली के भाषा बनने के कारण - कोई बोली यदि अपनी शाखा की अन्य बोलियों से दूर जा पड़ती है और अकेली होने के कारण महत्वपूर्ण बन जाती है तब वह बोली भाषा बन जाती है। जैसे — ब्राहुई भाषा।

साहित्यिक महत्व पा जाने के कारण भी कोई बोली भाषा बन जाती है।

धार्मिक श्रेष्ठता भी इसमें एक कारण है। राम और कृष्ण के कारण अवधी और ब्रजभाषा का महत्व अन्य बोलियों की अपेक्षा अधिक हो गया और इनमें साहित्य रचना भी खूब हुई।

बोलने वालों की महत्ता से भी बोली भाषा बनती है। अंग्रेजों की महत्ता से अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनी है।

बोली के भाषा बनाने में राजनीतिक कारणों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। जो स्थान राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होगा उसकी भाषा भी महत्वपूर्ण होगी। खड़ी बोली के साथ ऐसी ही बात है। इसने ब्रजभाषा, अवधी और मैथिली जैसी सम्पन्न बोलियों को दबाकर राष्ट्रभाषा का पद प्राप्त कर लिया।

कभी-कभी ऐसा होता है कि महत्ता मिलने के बाद भी कोई बोली भाषा नहीं बन पाती। उदाहरण के लिए ब्रजभाषा को लिया जा सकता है। सदियों तक इसे साहित्यिक महत्व प्राप्त हुआ फिर भी यह भाषा का गौरव नहीं प्राप्त कर सकी।

बोली ही परिमार्जित होकर मानक भाषा या परिनिष्ठित भाषा बन जाती है। वह भाषा अधिक साफ-सुथरी तथा परिशुद्ध होती है। यह शुद्धता व्याकरण का नहीं, बल्कि ध्वनि तत्व तथा शब्द रूप तत्व आदि की होती है। यही